अव्यय

अविकारी शब्द की परिभाषा

जिन शब्दों में बदलाव नहीं होता, वे हमेशा एक ही रुप में बने रहते हैं, उनके एक ही रुप के कारण इन्हें (अविकारी शब्द) अव्यय कहते हैं।

दूसरे शब्दों में अव्यय का अर्थ अ + व्यय = जिनका व्यय न हो; अर्थात जो बिना विकार के हो, इन्हें बदला नहीं जा सकता इसलिए इनको अविकारी शब्दों के नाम से भी जाना जाता है।

परिभाषा :- जिन शब्दों में लिंग, वचन, पुरूष काल आदि से मिलकर विकार (रुप में बदलाव) नहीं आता, अव्यय कहलाते हैं; जैसे - ओह, अरे, तेज़, आज, परन्तु, किंतु।

अव्यय चार प्रकार के होते हैं -

(1) क्रिया विशेषण

(2) सम्बन्धबोधक

(3) समुच्चयबोधक

(4) विस्मयादिबोधक

क्रिया विशेषण

क्रिया विशेषण :- जिन शब्दों के द्वारा क्रिया शब्दों की विशेषता का पता चलता है, वह क्रिया विशेषण कहलाते हैं; जैसे -

(क) मोहन मधुर गाता है।

यहाँ 'मधुर' शब्द गाने की विशेषता बता रहे हैं, इसलिए यहाँ क्रिया विशेषण है।

(ख) वह धीरे-धीरे चलती है।

'धीरे-धीरे' यहाँ चलती है कि विशेषता बता रहा है।

क्रिया विशेषण के चार भेद माने गए हैं -

(1) कालवाचक क्रिया विशेषण

(2) स्थानावाचक क्रिया विशेषण

(3) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण

(4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण

(1) कालवाचक क्रिया विशेषण :- जिस क्रिया-विशेषण शब्द से कार्य के होने का समय ज्ञात होता हो, वह कालवाचक क्रिया-विशेषण कहलाता है; जैसे -

(i) हम मसूरी कई बार आए हैं।

यहाँ **'कई बार'** क्रिया की विशेषता को बता रहा है, यह कालवाचक क्रिया विशेषण है।

(ii) डॉक्टर घटना स्थल पर तत्काल पहुँच गया।

यहाँ **'तत्काल'** (काल) क्रिया कि विशेषता बता रहा है इसलिए कालवाचक क्रिया विशेषण है।

(2) स्थानावाचक क्रिया-विशेषण :- जिन शब्दों से कार्य के होने के स्थान का ज्ञात हो (बोध हो), उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) उत्तर दिशा इस ओर पड़ती है।

(ii) तुम्हारा दाहिना हाथ बेकार हो गया।

यहाँ **'इस ओर'** व **'दाहिना'** (स्थान) शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं, यहाँ स्थानवाचक क्रिया विशेषण है।

(3) परिमाणवाचक क्रिया विशेषण :- जो शब्द क्रिया का परिमाण बतलाते हैं, वे 'परिमाणवाचक क्रिया-विशेषण' कहलाते हैं; जैसे -

(i) चीनी थोड़ी डालो।

(ii) इस साल दिल्ली में गर्मी में तापमान उच्चतम पर था।

(iii) नीम जितना खाओ उतना लाभकारी होता है।

यहाँ **'थोड़ी', 'उच्चतम', 'जितना' 'उतना'** शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

(4) रीतिवाचक क्रिया विशेषण :- जो शब्द क्रिया के होने की रीति या विधि संबधी विशेषता बताता है, उसे रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहते हैं; जैसे -

(i) तुम अपना गृहकार्य झटपट खत्म कर लो।

(ii) पाँडव, कौरवों से कभी नही डरे।

(iii) टाम, जैरी को ध्यानपूर्वक देख रहा था।

यहाँ 'झटपट', 'कभी नहीं' व 'ध्यानपूर्वक' शब्द क्रिया की विशेषता बता रहे हैं।

सम्बंधबोधक अव्यय

सम्बन्धबोधक अव्यय :- सम्बन्धबोधक अव्यय अपने पूर्वपद के साथ संबंध जोड़ता है। पद के पहले हमेशा किसी न किसी परसर्ग की अपेक्षा रहती है; जैसे -

(i) मेघा के वास्ते हम फ्रॉक लाए।

(ii) राम की अपेक्षा लक्ष्मण अधिक क्रोधित थे।

(iii) गुफ़ा के अंदर बाली और सुग्रीव का युद्ध हो रहा था।

(iv) घर के बाहर नीम का पेड़ है।

यहाँ 'के वास्ते', 'की अपेक्षा', 'के अन्दर', 'के बाहर' जैसे शब्द अपने पहले के शब्दों से सम्बन्ध जोड़ रहे हैं, इसलिए ये सम्बन्धबोधक अव्यय हैं।

सम्बन्धबोधक अव्यय के निम्नलिखित भेद माने जाते हैं -

(1) स्थानावाचक - बीच, नीचे, ऊपर, भीतर, बाहर

(2) कालवाचक - बाद, पश्चात्, आगे, पीछे

(3) साधनवाचक - खातिर, द्वारा, निमित्त, कारण

(4) दिशावाचक - ओर, निकट, समीप, सामने

(5) विरोधसूचक - विरुद्ध, खिलाफ़, उल्टे, प्रतिकूल

(6) हेतुवाचक - रहित, अतिरिक्त, अथवा, अलावा

(7) समतासूचक - समान, तरह, सदृश, तुल्य, अनुसार

(8) सहचरसूचक - संग, साथ, समेत

(9) विषयवाचक - बाबत, लेख, विषय

जैसे - श्याम के पास एक किताब है। उस किताब के अंदर बहुत महत्वपूर्ण जानकारी है। किताब के बीच में श्याम ने अपना नंबर लिखा है। किताब के बाहर श्याम ने सुंदर जिल्द चढ़ाई है।

उसके ऊपर अपना नाम लिखा है। नाम के आगे उसने कक्षा का नाम लिखा है। किताब के समीप उसका पेन पड़ा है।

समुच्चयबोधक अव्यय

समुच्चयबोधक अव्यय :-जो अव्यय, पदों, पदबंधों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, वे समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे – कि, अथवा, और, क्योंकि, इसलिए, तथा, एवं, व, किन्तु, मगर, परन्तु, लेकिन, इस कारण, नहीं तो, ताकि, क्योंकि, या, अन्यथा, चाहो, न इत्यादि।

(i) रावण और राम का युद्ध हुआ क्योंकि रावण ने सीता का हरण किया।

यहाँ **'क्योंकि'** शब्द राम व रावण युद्ध को सीता हरण से जोड़ रहा है।

(ii) भारत व पाकिस्तान के बीच मैत्री सम्बन्धी बातचीत हुई।

यहाँ **'व'** शब्द भारत, पाकिस्तान को आपस में जोड़ रहा है।

(iii) बिजली जाने पर श्याम एक जगह बैठा रहा कि कहीं उसे चोट न लग जाए।

यहाँ **'कि'** शब्द श्याम को बैठे रहने को चोट न लगने से जोड़ रहा है।

समुच्चयबोधक के दो भेद माने जाते हैं -

(1) समानाधिकरण समुच्चयबोधक

(2) व्याधिकरण समुच्चयबोधक

(1) समानाधिकरण समुच्चयबोधक :- जिन शब्दों के द्वारा दो समान वाक्यांष पदों और वाक्यों को आपस में जोड़ा जा सके वह समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं; जैसे
एवं, तथा, किंतु, वरना, परन्तु, अतः, बल्कि, और।

(i) रवि का संगीत बहुत उत्कृष्ट है और अच्छा संगीत देता है।

समानाधिकरण समुच्चयबोधक चार प्रकार के हैं -

(•) **संयोजक** :- जो शब्द वाक्यांशो और उपवाक्यों को आपस में जोड़ने का कार्य करते हैं, संयोजक कहलते हैं; जैसे - और, एवं, तथा, व आदि।

(i) शिला व तरुणा साथ मिलकर खाना पकाते हैं।

(ii) श्याम और राम दो भाई हैं।

(•) **विभाजक** :- जिन शब्दों द्वारा वाक्यांशों और उपवाक्यों में आपस में विभाजन (टुकड़े) किया जा सकता है, उन्हें विभाजक कहा जाता है; जैसे - या, अन्यथा, वा, चाहे, अथवा, आदि।

(i) सोमेश अथवा विमलेश से प्रार्थना करवाओ।

(ii) तुम स्पाइडरमैन या एक्समेन की फिल्म देखो।

(•) विरोधदर्शक :- जो शब्द, दो आपस में विरोधी कथनों और उपवाक्यों को जोड़ते हैं, वे शब्द विरोधदर्शक कहलाते हैं; जैसे - पर, परन्तु, मगर, किंतु, बल्कि, लेकिन।

(i) मैं उमेश के घर गेम खेलने जा रहा था मगर मुझे चोट लग गई।

(ii) रत्ना अच्छी है पर वह बहुत बोलती है।

(•) **परिणामसूचक** :- उपवाक्यों को आपस में जोड़कर परिणाम दिखाने वाले शब्द को परिणामसूचक कहते हैं; जैसे - इसलिए, अतएव, परिणामस्वरुप, फलस्वरूप, फलतः, अन्यथा, ताकि।

(i) कड़ी मेहनत के फलस्वरुप मैं प्रथम आया।

(ii) सावधानी बरतें अन्यथा दुर्घटना घट सकती है।

(2) **व्याधिकरण समुच्चयबोधक** :- जिस शब्द के द्वारा एक प्रधान वाक्य में एक अथवा एक से अधिक आश्रित वाक्य जुड़ते हैं, उन्हें व्याधिकरण समुच्चयबोधक कहते हैं।

व्याधिकरण अव्यय भी चार प्रकार के होते हैं -

(•) **संकेतबोधक** :- जिन वाक्यों की शुरूआत में अगले कार्य (योजक) की ओर इशारा होता है, उसे संकेतबोधक कहते हैं; जैसे - यदि–तो, यद्यपि–परन्तु, यद्यपि–तथापि, जा-तो, आदि।

(i) यदि तुम कहो तो मूवी देखने चलते हैं।

(ii) यद्यपि यह मूवी अच्छी थी परन्तु इसकी शुरुआत खराब थी।

(•) **हेतूबोधक** :- जिन शब्दों के द्वारा वाक्य में कार्य का कारण ज्ञात होता है, वह हेतुबोधक कहा जाता है; जैसे - चूँकि, क्योंकि, ताकि, इसलिए, कि, आदि।

(i) हम कल ही मसूरी से आए हैं इसलिए आज स्कूल नहीं गए।

(ii) तुम गेंद को सही फेंको ताकि उसे आउट किया जा सके।

(•) **उद्देश्यबोधक** :- जिन शब्दों से कार्य के उद्देश्य का पता चलता है, उसे उद्देश्य बोधक कहते हैं; जैसे - ताकि, जिससे, कि, इसलिए, कि आदि।

(i) वह खाना जल्दी बना रही है ताकि अपना सीरियल (नाटक) देख सके।

(ii) वह सिलाई-कढ़ाई सीख रही है जिससे कि वह फैशन डिजाइनर बन सके।

(•) **स्वरुपबोधक** :- जिस योजक को पहले लिखे शब्द/वाक्यांश को स्पष्ट करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है, स्वरुपबोधक कहलाता है; जैसे - मानो, यानि, अर्थात्, कि।

(i) तुम्हें पैसों के बारे में पता है यानि तुम चोर को जानते हो।

(ii) अमिताभ बच्चन 6 फुट के है मानो ताड़ जैसे हो।

विस्मयादिबोधक अव्यय

विस्मयादिबोधक :- विस्मयादिबोधक अव्यय वे रुप हैं जो शोक, घृणा, आश्चर्य, हर्ष आदि भावों को प्रकट करने के लिए अचानक ही मुँह से निकल जाते हैं परन्तु इनका वाक्य के अन्य शब्दों से कोई सम्बन्ध नहीं बनता (होता)।

(i) वाह! क्या बात है।

(ii) सावधान! राक्षस आ रहे हैं।

(iii) शाबास! तुम प्रथम आए हो।

(iv) छी: छी:! तुम गंदे लड़के हो।

इन उदाहरणो को पढ़कर आपको अनुमान हो गया होगा कि विस्मयादिबोधक शब्दों के बाद विस्मयादिबोधक चिह्न (!) लगाते हैं।

इसको निम्नलिखित भागों से विभाजित किया जा सकता है।

- विस्मयबोधक :- अरे! , क्या! , सच!

- तिरस्कारबोधक :- धिक्कार है!, हट!, चुप!
- हर्षबोधक :- वाह-वाह! , धन्य! , अहा! , शाबाश!
- घृणाबोधक :- छी! , धत्!
- शोकबोधक :- हाय! , आह! , त्राहि!
- स्वीकृतिबोधक :- अच्छा! , ठीक! , हाँ-हाँ! , बहुत अच्छा! , अच्छा! ,
- संबोधनबोधक :- हे राम! , हरे कृष्णा! , अरे! , रे!